E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(1): 65-66
Received: 18-05-2019
Accepted: 22-06-2019

विजय शंकर पंडित
गवेषक, विश्वविद्यालय
मैथिली–विभाग, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
विजय शंकर पंडित
गवेषक, विश्वविद्यालय
मैथिली–विभाग, ललित नारायण
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत

लिलीरेक उपन्यासक समीक्षात्मक अध्ययन

विजय शंकर पंडित

सारांश
मैथिली साहित्यमे उपन्यास विधामे लिलीरेक योगदान स्वर्णाक्षरमे अंकित कएलजा सकैत अछि। हिनक लिखल 'मरीचिका' उपन्यास लोककें एखनहुँ सम्मोहित करैत अछि। 'मरीचिका' पर लिलीरेकें 1982मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान कएल गेल रहन्हि। लोकक कहब रहैक जे पुरस्कार स्वयं पुरस्कृत भेल अछि। विश्वनाथ द्वारा प्रस्तुत अन्तरंगवार्तामे ओ एहि पुरस्कारक प्रसंग चर्चा कएने छथि। उत्साह आ उल्लासक संग पुरस्कारक प्रसंग अपन मनोभावकें व्यक्त कएने छथि।

प्रस्तावनाः
बहुमुखी प्रतिभक धनी श्रीमती लिलीरे अपन रचना कौशलसँ मैथिली उपन्यास साहित्यकें समृद्ध कएने छथि। एतय उल्लेखनीय अछि जे हिनक लिखल अनेक उपन्यासक प्रकाशन मैथिलीक प्रख्यात समालोचक डॉ० रमानन्द झा 'रमण'क सौजन्यसँ सरिसब पाहीक साहित्यिकी संस्था सँ भेल अछि। हिनक लिखल उपन्यासक विवरण निम्नलिखित अछि–

1. मरीचिका (उपन्यास) भाग– 1, 1981
2. मरीचिका (उपन्यास) भाग–2, 1982
3. उपसंहार (उपन्यास), 2015
4. पटाक्षेप (उपन्यास), 2015
5. एकटा बड्ड पुरान गप्प (उपन्यास), 2015

उल्लेखनीय अछि जे लिलीरेक पटाक्षेप उपन्यास हिन्दी भाषामे अनुदित भए प्रकाशित भेल अछि। एहि तरहें उपन्यास लेखनक क्षेत्रमे लिलीरेक अवदान अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। उपन्यास लेखनक क्षेत्रमे हिनक प्रतिभाक उत्कर्षकें अनुभव कएल जा सकैत अछि। हिनक उपन्यास सम्पूर्णतामे प्रभाव। उत्पन्न करैत अछि। उपन्यासक शिल्प ओ शैली छैक तकर ई अनुपालन करैत छथि। हिनक कथ्य ओ कथानक विस्तृत परिवेश ओ वातावरण पर आधारित रहैत छन्हि। अनेक तरहक पात्र रहैत छन्हि। उपन्यासमे उत्सुकता बनल रहैत अछि। उत्सुकता क्रमिक बढ़ल जाइत अछि। उत्सुकता एहन बद्धैत अछि पाठक आ पाठिकक मोनमे जे ओ सबकिछु बिसरि उपन्यसाक घटनामे लीन भऽ जाइत अछि। अनेक तरहक रसक सृजन करैत छथि। अनेक तरहक दृश्यक संयोजन करैत छथि। अनेक घटना चक्र अबैत अछि आ अपन छाप छोड़ि चल जाइत अछि। एहि तरहें स्पष्ट होइत अछि जे भारतीय भाषा साहित्यमे आ विशेषरूपमे मैथिली भाषा साहित्यमे सफल उपन्यास लेखिकाक रूपमे हिनक नाम परिगणित कएल जाइत अछि। ओना लिलीरे स्पष्ट रूपें गछैत छथि जे हिनक पिता भीमनाथ मिश्र साहित्यिक अभिरुचिक रहन्थि। घरमे छोटछीन पुस्तकालय रहन्हि। पुस्तकालयमे अनेक कथा संग्रह आदि रहैक। सभसँ पहिने ओहि आलमीरामे हिनका कन्यादान आ द्विरागमन उपन्यास भेटल रहन्हि। लेखक प्रोफेसर हरिमोहन झा। लिलीरे बाल्यकालमे एके सांसमे कन्यादान आ द्विरागमनकें पढ़ि गेल रहथि। लिलीरे आरम्भमे हरिमोहन झाक अनुकरण कएल। मुदा बादमे दिशा बदलि गेलन्हि। ओहि समयक प्रखक लेखक ललित आ राजकमलसँ मार्गदर्शनप्राप्त भेलन्हि। मोनमे विप्लव मचि गेलन्हि। कोनो उपन्यासमे टुटैत खसैत जमीन्दारी व्यवस्थाक चित्रात्मक वर्णन कएल तऽ कोनो उपन्यासमे सर्वहाराक विक्षोह आ विप्लवकें प्रस्तुत कएल। पुरान आ नव युगक मार्मिक वर्णन हिनक उपन्यसामे भेटत।[1]

अपन रचना प्रक्रिक विश्लेषणक क्रममे लिलीरे अन्तरंग वार्तामे अनेक स्थल पर विचार व्यक्त कएने छथि–

– ''देखू.. जेना हम कहलहुँ... कथा–उपन्यासक पहिल गुण थिकैक जे पाठककें अभिभूत करए... जँ से नहि भेल तँ सबटा व्यर्थ। तखन अहाँ पाठककें अभिभूत क' सकैत' छी तँ व्यवस्था परिवर्तन सेहो क' सकै छी। कथा–उपन्यास तँ चिनगारी थिक।.... विचार आ चेतना जतेक सहज रूपमे कथा–उपन्यासक माध्यमे परसल जा सकै छै ततेक कोनो आन माध्यमे नहि।[2]

– दार्जिलिंग। सी. आर. दास रोडक मथुरा भवनमे ऊपरसँ दोसर तलमे रहैत छथि दुर्गागंज, सोनाली, जिला कटिहारक अवकाशप्राप्त डाक्टर साहेब आ मैथिलीक अपराजेय कथा–शिल्पी श्रीमती लिलीरे।

सामन्तवादसँ नक्सलवादक संघर्षपूर्ण यात्राक नाम थिक लिली रे।(3)

– ''सामन्तवादक बीचमे अहाँक जन्म आ लालन–पालन भेल... तखन फेर विद्रोह?''

– ''वर्जना आ निषेध हमरा मंजूर नहि भेल कहियो। हम अपन रास्ता ध'क' चलैत रहलहुँ।.... ई अवश्य जे हमर जन्म जमीन्दार परिवारमे भेल। मुदा हम जमीन्दारी ठाठ–वाटसँ सामन्जस्य नहि बैसा सकलहुँ.... ई अवश्य जे हमर लालन– पालन सामंती परिवेशमे भेल मुदा हम सामन्तवादक चकाचौन्हमे भोतिआएब कहियो स्वीकार नहि कएल!.... हम लीकसँ हँटिक' अपन रास्ता पर चलैत सुख–दुख भोगत आइ उन्नैस वर्ष सँ एहि पहाड़ आ जंगलक बीचमे रहैत छी। मुदा देल परिस्थितिसँ सामन्जस्य करब हमर स्वभावमे नहि अछि।.... हमर डाक्टर साहेबक स्वभावमे नहि छनि। हमर बाल–बच्चा तँ आर प्रखर स्वाभिमानी अइ।

– ''अहाँ अपन लेखनक माध्यमे की कह' चाहै छिऐक?''

– ''किछु नहि.... हम उपदेशक नहि छी। हम पंडित नहि। परउपदेश हमर काज नहि। हम अपन लेखनक माध्यमसँ लोककें असलियत देखा दै' छिए.... नकाव उतारि दै'छिए.... आ हमर काज खत्म भ' जाइ अछि। सत्यमे ताकत होइत छैक, सामर्थ्य होइत छैक''

–''माने बारुदकें सुलगा दै' छिऐ...?''

– ''हँ, सत्य आ यथार्थ बारुदोसँ प्रलयंकर....''

– ''दीपा मेहताक 'फायर' आ 'वाटर'?''

– ''देखू, समाजमे जे भ' रहल छैक जे यथार्थ छैक– तकरा अहाँ कतेक काल चोरएबैक.... कतेक काल दबएबैक..... सब युगक अपन–अपन संघर्ष छैक। अपन यथार्थ छैक। 'फायर' सिनेमाक तँ सफल प्रस्तुति भेलैक। लेसवियन एक प्रकारक सेक्सकुण्ठा थिक!..... मुदा 'वाटर' फिल्ममे दीपा मेहता चोरि कएने छथि।''(4)

– ''केहन चोरि?''

– ''दीपा मेहता बंगालक प्रसिद्ध उपन्यासकार सुनील गंगोपाध्यायक सेइ समय (बीतलकाल) सँ थीम उड़ा लेने छथिन आ अपना नामे ढोल पिटबा लेलनि। हमर थिक वाटर। ई एक प्रकारक अनर्थ थिक। मूल लेखकक श्रेय हड़पि लेब सर्वथा अनुचित।''

– ''आ वाटरक थीम? ओकर कथ्य? ओकर हंगामा...?''

– ''थीम' पर हमरा कोनो आपत्ति नहि... जे यथार्थ छैक–सत्य छैक.... तकरा कतेक काल झाँपबैक– धूआँसँ धधरा नीक।''(5)

मैथिलीक सिद्ध–प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' द्वारा लिखित मैथिली साहित्यक इतिहासमे लिलीरेक उपन्यसाक समीचीन व्याख्या उपलब्ध अछि। डॉ० श्रीशक तर्कपूर्ण, स्पष्ट एवं नीर–क्षीर विवेचनक माध्यमे लिलीरेक उपन्यास लेखनक अनेक उत्कर्षपूर्ण पक्षक विवरण उपलब्ध होइत अछि। अतएव हिनक उपन्यासक प्रसंग डॉ० श्रीशक विचारक उल्लेख करब आवश्यक अछि। डॉ० श्रीशक हुनक मरीचिका उपन्यासक विवेचन कएने छथि। मुदा पहिने लिलीरेक मरीचिकाक प्रसंग प्रस्तुत कएल गेल विचारक उल्लेखक करब आवश्यक अछि।(6)

– ''मरीचिका उपन्यास लिखबाक की कारण?''

– ''हमरा की भेल तँ एक बेरि अनिद्राक रोग भ' गेल। निन्दे नहि होइत छल। महाग विपत्ति। मोन अवसन्न। कमजोरी। तखन गोहरौलहुँ माँ हे, हे माँ सरस्वती... आ लिखए लगलहुँ। बीच–बीचमे मोन विकल भ' जाए... जगदम्बा। हे! पार लगाबह... विद्यापतिक गीत गाबी... जय–जय भैरवि.... पार लगाबह हे मइया.. नइया पार लागि गेल!... अनिद्रक उपचारो भ' गेल आ उपन्यासो लिख गेल।... मरीचिका थिक विशालकाय उपन्यास... एपिक नॉभेल। पूरे एक वर्ष लागल पूरा करबामे। दू–तीन हजार पन्नामे लिखने रही। काटि–छाँटिक' वर्तमान स्वरूपमे प्रकाशित भेल।(7)

निष्कर्ष

''मरीचिका पर बहुत लीखल गेल अछि.... लोक सब लीखि रहल छथि....'' ''जी अपने दृष्टिमे मरीचिकाक मूल स्वर?'' ''ओना तँ विविध घात–प्रतिघातक स्वर छैक। मुदा मूलमे सामन्तवादसँ जे नव युग बहरएलैक तकरे इतिवृत्तान्त, संघर्ष, वासना, प्रेम.... जीवनक आरोह–अवरोह थिक मरीचिका।''

संदर्भ सूची:

1. विश्वनाथ, युगान्तर, 2001, मैथिली रचना मंच, दरभंगा, पृ.– 168
2. तथैव, पृ.– 169
3. लिलिरे, मरीचिका, 1981, मैथिली अकादमी, पटना, पृ.– 5
4. तथैव, पृ.– 7
5. विश्वनाथ, युगान्तर, 2001, मैथिली रचना मंच, दरभंगा, पृ.– 172
6. तथैव, पृ.– 175
7. लिलिरे, मरीचिका, 1981, मैथिली अकादमी, पटना, पृ.– 9